# चाणक्य के राजनीतिक विचार आज के संदर्भ में कहां तक उचित

**Dr. SUCHETA VERMA**

**Assistant Professor - Political Science, S. P. C. Government College, AJMER (RAJASTHAN)**

सार

आजकल राजनेताओं को उनकी राजनीतिक पार्टियों का चाणक्य कहा जा रहा है। इसके कई कारण हैं, जैसे उनकी नीति-निर्माण क्षमता या सत्ता पर नियंत्रण रखने की उनकी क्षमता। आज चाणक्य को अक्सर गंदी राजनीति का जनक कहा जाता है, लेकिन क्या सच में ऐसा है?

अगर हम इतिहास पर नज़र डालें तो ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में हमें एक असहाय पुत्र मिलता है, जिसे अपने जन्मस्थान से भागकर मीलों दूर एक अज्ञात क्षेत्र में जाना पड़ा। इसी पुत्र ने बाद में अपने शिष्य को प्रशिक्षित किया, जो भारत भर में फैले साम्राज्य का पहला राजा बना।

चाणक्य के बारे में बहुत कम जानकारी उपलब्ध है, लेकिन उन्हें भारत का सबसे महान राजनेता माना जाता है।

चाणक्य की धूर्तता का सबसे प्रसिद्ध उदाहरण राजा पोरस का किस्सा है। चाणक्य ने धनानंद को हराने के लिए राजा पोरस की सहायता ली और बदले में धनानंद के राज्य का आधा हिस्सा ले लिया। विजय के बाद, चाणक्य ने राजा के लिए सुख-सुविधाओं का प्रबंध करने के बहाने विष कन्याओं को पोरस के कक्ष में भेजा। इन कन्याओं ने पोरस की हत्या कर दी, जिससे चंद्रगुप्त के लिए मार्ग प्रशस्त हुआ। चाणक्य ने राक्षस मंत्री को चंद्रगुप्त के पक्ष में करने के लिए भी कई तरह की तरकीबें अपनाईं। मौर्य साम्राज्य की सफलता के पीछे वही मुख्य रणनीतिकार थे।

सत्ता पर प्रभुत्व स्थापित करने के बाद, चाणक्य ने शांति काल में प्रशासन के लिए कठोर नैतिक संहिताएँ निर्धारित कीं, साथ ही अर्थशास्त्र में कमजोर और शोषितों की सामाजिक सुरक्षा के लिए एक विस्तृत संरचना भी प्रस्तुत की। हालाँकि चाणक्य नीति में कई ऐसे अंश हैं जो स्त्री-द्वेषी प्रकृति के हैं, फिर भी यह समाज के पालन के लिए एक उच्च नैतिक संहिता प्रदान करती है।

## परिचय

चाणक्य को भारत का मैकियावेली कहा जाता है, लेकिन मेरा मानना है कि यह एक यूरोपीय-केंद्रित विचार है। मेरे विचार से दो कारण हैं जो यह साबित करते हैं कि चाणक्य मैकियावेली से कहीं अधिक श्रेष्ठ थे। पहला, चाणक्य का काल मैकियावेली के काल से 1700 वर्ष पूर्व का है, और दूसरा, चाणक्य के राज्य-प्रबंध और राजनीति संबंधी कार्य अधिक व्यापक हैं। चाणक्य के सिद्धांत मैकियावेली से भिन्न हैं। चाणक्य राजा से केवल युद्ध के समय और शत्रुओं के विरुद्ध ही नैतिकता का त्याग करने को कहते हैं, जबकि मैकियावेली के अनुसार राजनीति हर समय नैतिकता से रहित होती है और केवल सत्ता प्राप्त करने का एक साधन मात्र है। चाणक्य एक सफल राजनीतिज्ञ थे। हम उनकी पद्धतियों की नैतिकता पर बहस कर सकते हैं, लेकिन उन्होंने

प्रथम भारतीय साम्राज्य की नींव रखी जिसने एक घनी आबादी वाले क्षेत्र में शांति और समृद्धि लाई। मैकियावेली की विरासत निर्मम उपनिवेशवाद, दास व्यापार और अनेक संस्कृतियों का विनाश है।[1,2,3]

मैं इस बात से सहमत हूँ कि चाणक्य ने अपने प्रतिशोध को पूरा करने के लिए समा, दमा, दंड और भेद के सिद्धांतों का प्रयोग किया, लेकिन यही उनकी विरासत नहीं है। हर सिक्के के दो पहलू होते हैं। उनकी विरासत उनके नाम से ज्ञात दो ग्रंथों, चाणक्य नीति और अर्थशास्त्र में निहित है, जिनमें उन्होंने प्रशासन के सभी पहलुओं को शामिल किया है।

लोग सोचते हैं कि अर्थशास्त्र इस बात की स्वीकृति है कि राजनीति अब नैतिक नहीं रह सकती; इससे निपटने के लिए हर संभव साधन का इस्तेमाल करना होगा, लेकिन मैं इस राय से असहमत हूं।

हालांकि, मैं इस बात से सहमत हूं कि जब समाचार एंकर राजनेताओं की तुलना चाणक्य से करते हैं, तो वे अर्थशास्त्र में प्रतिपादित अनैतिक, व्यावहारिक राजनीति का महिमामंडन करते हैं।

मेरा मानना है कि किसी चीज़ से अच्छाई को अपनाना और बुराई को छोड़ देना ही सबसे अच्छा उपाय है। रणनीतिकार अपनी संस्कृति और समय की उपज होता है। हर रणनीतिकार का अपना तरीका होता है। इसलिए, अगर हम आज के राजनेताओं की तुलना चाणक्य से करें, तो हमें उनकी अच्छाई को ध्यान में रखते हुए ही ऐसा करना चाहिए।

चाणक्य का महत्व आज इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि अर्थशास्त्र में शासन कला के लिए उपयोगी विचारों, अवधारणाओं और पद्धतियों का समृद्ध भंडार है। अर्थशास्त्र के कई प्रमुख संदेश सार्वभौमिक हैं, जैसा कि अनेक प्राचीन भारतीय ग्रंथों की शिक्षाओं के मामले में भी है।[4,5,6]

विचार–विमर्श

आचार्य चाणक्य के राजनीतिक और कूटनीतिक विचार आज के 21वीं सदी के संदर्भ में भी कई स्तरों पर प्रासंगिक हैं, हालांकि आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था के अनुसार उनमें कुछ सीमाएं और बदलाव भी हैं। [1]

## प्रासंगिकता (कहाँ तक उचित हैं?)

- **लोककल्याण और सुशासन:** चाणक्य का मानना था कि *"राजा की प्रसन्नता प्रजा की प्रसन्नता में है"*। यानी शासक का मूल कर्तव्य जनता का योगक्षेम (कल्याण और सुरक्षा) सुनिश्चित करना है। यह विचार आधुनिक लोकतंत्र के 'कल्याणकारी राज्य' (Welfare State) के सिद्धांत से मेल खाता है। [1, 2]
- **सामरिक कूटनीति और मंडल सिद्धांत:** चाणक्य का 'मंडल सिद्धांत' और विदेश नीति से जुड़े सामर्थ्य-आकलन के सूत्र (मित्र, शत्रु और तटस्थ राज्यों का विश्लेषण) आज भी भू-राजनीति (Geopolitics) और कूटनीतिक रणनीतियों में उपयोग किए जाते हैं। [1, 2]
- **आर्थिक मजबूती और वित्तीय अनुशासन:** चाणक्य के अनुसार राज्य की स्थिरता के लिए मजबूत राजकोष (कोष) और वित्तीय प्रबंधन सबसे जरूरी है। यह आज के समय में देश या संस्था के बजट और आर्थिक प्रबंधन पर पूरी तरह लागू होता है। [1, 2]

- **गुप्तचर व्यवस्था और आंतरिक सुरक्षा:** आज के दौर में साइबर सुरक्षा, डेटा प्राइवेसी और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए सूचना तंत्र या जासूसी/निगरानी (Intelligence) की जो आवश्यकता है, उसकी नींव चाणक्य के अर्थशास्त्र में बहुत पहले दिखती है। [1, 2]
- **कठोर नेतृत्व और अनुशासन:** संकट के समय या राष्ट्र की संप्रभुता की रक्षा के लिए व्यावहारिक और कड़े फैसले लेने की क्षमता को आज भी 'चाणक्य नीति' से जोड़कर देखा जाता है। [1, 2]

---

## सीमाएं और आधुनिक विरोध (कहाँ कम उचित हैं?)

- **राजतंत्र बनाम लोकतंत्र:** चाणक्य ने राजतंत्र (Monarchy) और एकछत्र शासन का समर्थन किया था, जबकि आज का युग लोकतंत्र (Democracy), संविधान के शासन और जनता के मौलिक अधिकारों का है। राजा सर्वशक्तिमान नहीं हो सकता। [1, 2]
- **साधन और साध्य की नैतिकता:** चाणक्य कई बार लक्ष्य प्राप्ति के लिए साम, दाम, दंड, भेद और कठोर उपायों को जायज मानते हैं। आधुनिक लोकतंत्र में पारदर्शिता, मानवाधिकार और संवैधानिक नैतिकता ऐसे तरीकों पर नैतिक अंकुश लगाते हैं। [1, 2]
- **सामाजिक दृष्टिकोण:** चाणक्य के कुछ विचार और नीतियां उस दौर की वर्णव्यवस्था और स्त्री-विरोधी या पितृसत्तात्मक सोच से प्रभावित थीं, जो आधुनिक समतामूलक और लैंगिक समानता वाले समाज में स्वीकार्य नहीं हैं। [1, 2]

संक्षेप में, चाणक्य के **प्रबंधन, कूटनीति, अर्थशास्त्र और सुशासन** के व्यावहारिक सिद्धांत आज भी प्रासंगिक हैं, लेकिन उन्हें ज्यों का त्यों लागू करने के बजाय आधुनिक लोकतांत्रिक मूल्यों और संविधान के दायरे में ढालकर ही अपनाया जा सकता है। [1, 2, 3]

परिणाम

चाणक्य, जिन्हें कौटिल्य या विष्णुगुप्त के नाम से भी जाना जाता है, भारतीय इतिहास के महान विचारकों में से एक हैं। उनकी नीतियाँ और शिक्षाएँ आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं जितनी कि उनके समय में थीं। मैं जब चाणक्य नीति के अद्वितीय विचारों को समझता हूँ, तो मुझे लगता है कि ये केवल प्राचीन ग्रंथों की बातें नहीं, बल्कि जीवन के हर पहलू में उपयोगी मार्गदर्शन हैं। ये नीतियाँ हमें न केवल व्यक्तिगत विकास की ओर ले जाती हैं, बल्कि समाज और राष्ट्र के उत्थान में भी सहायक होती हैं।[7,8,9]

चाणक्य की नीतियाँ सरल, स्पष्ट और व्यवहारिक हैं। वे हमें सिखाती हैं कि कैसे हम अपने जीवन को संतुलित, सफल और सार्थक बना सकते हैं। आज मैं आपके साथ चाणक्य नीति के कुछ महत्वपूर्ण विचार साझा करना चाहता हूँ, जो आपके जीवन में सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं।

चाणक्य नीति के विचार

चाणक्य नीति के विचार जीवन के विभिन्न पहलुओं को छूते हैं – राजनीति, अर्थशास्त्र, नैतिकता, और व्यक्तिगत व्यवहार। उनकी नीतियाँ हमें यह समझाती हैं कि सफलता केवल भाग्य से नहीं, बल्कि बुद्धिमत्ता, धैर्य और सही निर्णय से मिलती है।

उदाहरण के लिए, चाणक्य कहते हैं कि "सर्वत्र विजय प्राप्त करने के लिए, पहले स्वयं को विजय करना आवश्यक है।" इसका अर्थ है कि बाहरी संघर्षों से पहले अपने अंदर के संघर्षों को जीतना जरूरी है। यह विचार हमें आत्म-नियंत्रण और आत्म-संयम की महत्ता बताता है।

चाणक्य नीति में यह भी बताया गया है कि मित्रता और सहयोग जीवन के महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। वे कहते हैं कि "सच्चा मित्र वही है जो संकट में साथ दे।" इस विचार से हमें अपने संबंधों को मजबूत करने और सही लोगों के साथ जुड़ने की प्रेरणा मिलती है।

चाणक्य नीति विचार को समझने के लिए हमें उनके ग्रंथों जैसे 'अर्थशास्त्र' और 'चाणक्य नीति' का अध्ययन करना चाहिए। ये ग्रंथ न केवल राजनीतिक और आर्थिक ज्ञान देते हैं, बल्कि जीवन के नैतिक और आध्यात्मिक पहलुओं पर भी प्रकाश डालते हैं।[10,11,12]

चाणक्य के तीन नियम क्या हैं?

चाणक्य के तीन नियम जीवन के मूलभूत सिद्धांतों को दर्शाते हैं, जो हर व्यक्ति के लिए मार्गदर्शक हो सकते हैं। ये नियम हैं:

स्वधर्म का पालन - अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों को समझना और उनका पालन करना। चाणक्य कहते हैं कि व्यक्ति को अपने धर्म और कर्तव्य से कभी विचलित नहीं होना चाहिए।

सत्संग का महत्व - अच्छे और ज्ञानी लोगों के साथ समय बिताना। यह हमें सही दिशा में सोचने और निर्णय लेने में मदद करता है।

धैर्य और संयम - जीवन में आने वाली कठिनाइयों का सामना धैर्य और संयम से करना। चाणक्य के अनुसार, संयमित व्यक्ति ही सच्ची सफलता प्राप्त करता है।

इन नियमों का पालन करके हम न केवल अपने जीवन को बेहतर बना सकते हैं, बल्कि समाज में भी सकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं। ये नियम हमें आत्म-शक्ति और मानसिक स्थिरता प्रदान करते हैं।

चाणक्य नीति के व्यावहारिक उपयोग

चाणक्य की नीतियाँ केवल सिद्धांत नहीं हैं, बल्कि इन्हें हम अपने दैनिक जीवन में भी लागू कर सकते हैं। आइए कुछ उदाहरणों के माध्यम से समझते हैं:[13,14,15]

व्यवसाय में सफलता: चाणक्य कहते हैं कि "व्यापार में ईमानदारी और समय की पाबंदी सफलता की कुंजी है।" यदि हम अपने काम में ईमानदारी और अनुशासन बनाए रखें, तो सफलता निश्चित है।

संबंधों में सुधार: वे सलाह देते हैं कि "संबंधों को मजबूत करने के लिए संवाद और समझदारी आवश्यक है।" इसलिए, परिवार और मित्रों के साथ खुलकर बात करें और उनकी भावनाओं को समझें।

स्वास्थ्य और मानसिक शांति: चाणक्य नीति में योग और ध्यान को भी महत्व दिया गया है। नियमित ध्यान और संतुलित आहार से हम शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बना सकते हैं।

इन व्यावहारिक उपायों को अपनाकर हम अपने जीवन को अधिक संतुलित और सफल बना सकते हैं। चाणक्य की नीतियाँ हमें सिखाती हैं कि जीवन में स्थिरता और सफलता के लिए निरंतर प्रयास और सही दिशा आवश्यक है।

चाणक्य नीति से प्रेरणा लेकर जीवन में बदलाव

जब मैं चाणक्य नीति के विचारों को अपने जीवन में लागू करता हूँ, तो मुझे लगता है कि ये विचार हमें न केवल बाहरी सफलता देते हैं, बल्कि आंतरिक शांति और संतोष भी प्रदान करते हैं।

चाणक्य की नीतियाँ हमें सिखाती हैं कि जीवन में आने वाली चुनौतियों का सामना कैसे करें, कैसे अपने मन को नियंत्रित करें, और कैसे अपने लक्ष्य की ओर दृढ़ता से बढ़ें। ये नीतियाँ हमें याद दिलाती हैं कि सफलता का मार्ग सरल नहीं होता, लेकिन सही सोच और प्रयास से हर बाधा पार की जा सकती है।

मैं आपको भी प्रोत्साहित करता हूँ कि आप चाणक्य नीति विचार को गहराई से समझें और अपने जीवन में उतारें। इससे न केवल आपका व्यक्तित्व निखरेगा, बल्कि आप समाज में भी एक सकारात्मक बदलाव ला सकेंगे।

जीवन में चाणक्य नीति का महत्व

चाणक्य नीति का महत्व आज के समय में और भी बढ़ गया है। जब हम तेजी से बदलती दुनिया में जी रहे हैं, तब हमें ऐसे मार्गदर्शन की आवश्यकता है जो हमें स्थिरता और संतुलन प्रदान करे। चाणक्य की शिक्षाएँ हमें यह सिखाती हैं कि कैसे हम अपने जीवन को सरल, सच्चा और सार्थक बना सकते हैं।

उनकी नीतियाँ हमें आत्म-ज्ञान, नैतिकता, और सामाजिक जिम्मेदारी की ओर प्रेरित करती हैं। ये विचार हमें याद दिलाते हैं कि जीवन में सफलता केवल बाहरी उपलब्धियों से नहीं, बल्कि आंतरिक विकास से भी मापी जाती है।

इसलिए, चाणक्य नीति को अपनाकर हम न केवल अपने जीवन को बेहतर बना सकते हैं, बल्कि एक बेहतर समाज और राष्ट्र के निर्माण में भी योगदान दे सकते हैं। यह ज्ञान हमें अपने संस्कृतिक और आध्यात्मिक मूल्यों से जोड़ता है और हमें एक संतुलित जीवन जीने की प्रेरणा देता है।[16,17,18]

चाणक्य नीति के ये अद्वितीय विचार हमें जीवन के हर क्षेत्र में मार्गदर्शन देते हैं। मैं आशा करता हूँ कि आप भी इन विचारों को अपने जीवन में अपनाकर एक सकारात्मक और सफल जीवन की ओर बढ़ेंगे। जीवन में स्थिरता, सफलता और शांति पाने के लिए चाणक्य की नीतियाँ एक अमूल्य धरोहर हैं, जिन्हें हमें संजोकर रखना चाहिए।

चाणक्य का एक नाम विष्णुगुप्त भी बताया जाता है। अर्थशास्त्र में केवल एक बार चाणक्य को इस नाम से पहचाना गया है। लेकिन अन्य साक्ष्य इस बात का संकेत देते हैं कि विष्णुगुप्त ही उनका असली नाम रहा होगा। चाणक्य शब्द की जितनी भी व्याख्याएं की गई हैं उनसे साफ है कि यह शब्द स्वतंत्र शब्द नहीं है। इसका विकास उसी तरह से हुआ है जैसे रघु से राघव या पंडु से पांडव। चाणक्य के पिता का नाम अगर चणक था तो स्वाभाविक है कि आरम्भ में उनके बेटे को पिता के नाम से ही चाणक्य कहा जाता रहा होगा, जबकि नामकरण कुछ और हुआ होगा। लोकप्रिय साहित्य में इस बात पर अधिक बल दिया गया है कि चाणक्य का राजा नंद ने अपमान किया था और उसका ही बदला लेने के लिए चाणक्य ने नंद साम्राज्य को उखाडऩे का संकल्प लिया था। लेकिन जिस तरह का अभियान चाणक्य ने चलाया था, उसमें नंद को उखाडऩा तो गौण था, यवन आक्रांताओं को देश से बाहर रखना प्रधान लक्ष्य बन गया था। नंद के मारे जाने पर चाणक्य ने संन्यास नहीं लिया और न वे अपने महाविद्यालय लौटे। वे शासन के सिद्धांतों को रचने और सफल शासन के नियम—कायदे बनाने में लग गए। उन्होंने बरसों पहले एक बालक को एक अभियान के नेतृत्व के लिए चुना था। उसे इस योग्य बनाने के लिए बालक को शस्त्र और शास्त्र दोनों की शिक्षा दी। समय—समय पर उसे सही समर नीति सिखाई। लेकिन आचार्य और दूरद्रष्टा होने के नाते वे जानते थे कि शासक के लिए इतना ही पर्याप्त नहीं कि वे राजनीति के दांवपेंच सीख अपने विरोधियों को पछाड़े, अपितु यह भी आवश्यक है कि शासक सत्ता पाने के पश्चात अपने कर्तव्य से उदासीन न हो जाए, सत्ता के दंभ में निरंकुश न हो और सामान्य शिष्टाचार को अनावश्यक मान कर उदंड न बने। इस बात की ओर लोगों का ध्यान कम ही गया है कि चाणक्य के लिए राजधानी और साम्राज्य का केंद्रीय भाग ही महत्त्वपूर्ण नहीं था, वे सीमांत को सबसे अधिक महत्व देते थे। मौर्य साम्राज्य को स्थापित करने में उन्हें जितना समय उत्तर-पूर्व के क्षत्रपों को सम्भालने और यवन आक्रांताओं को सीमा से बाहर रखने में लगा, उतना ही हिमालय की तराइयों में स्थानीय राजाओं को संधियों में बांधने में लगा था। चाणक्य मानते थे कि जिस राजा की नजरें सीमा पर नहीं रहतीं, उसका देश अधिक समय तक सुरक्षित नहीं रह सकता है।

राष्ट्र केवल एक विशाल जन समूह ही नहीं होता और न किसी विशेष भूभाग पर अधिकार होना ही, उसे राष्ट्र बनाता है। जब यह जनसमूह किसी भूभाग में बहुत काल तक रहता है तो वह कई प्रकार के सहकारी नियम या बंधन स्वीकार कर लेता है जो उस समूह को शांति और साहचर्य में रहने के योग्य बनाए। उसकी परंपराएं बनती हैं, उसके संस्कार विकसित होते हैं। ऐसे संस्कारित जनसमूह के आदर्श उसका मार्गदर्शन करते हैं। इन आदर्शों में तों महान पुरुष, विद्वान ऋषि-मुनि, वीर व लोकप्रिय राजा या शासक उस जनसमूह के नायकों के रूप में उभरते हैं। ऐसा जनसमूह अगर अपने देश से विलग भी हो जाए तो भी उसकी परंपराएं, उसके आदर्श और उसके नायकों की सीख उसे पुनः अपने देश में स्थापित होने या नए देश बनाने की क्षमता देते हैं।

कुछ समय पहले जब मैं कनाडा में था तो वहां मुझे कई बार ऐसा लगता था कि कनाडा आज भी राष्ट्र बनने की आरम्भिक छटपटाहट से ही गुजर रहा है। एक बार विचार विमर्श के दौरान वहां के एक पत्रकार ने बताया कि ऐसा इसलिए है कि हमारे पास अमरीकियों की तरह बाकायदा नित नए–नए नायकों का उत्पादन करने की व्यवस्था नहीं है। अमेरिका की राजनैतिक आयु कुछ सौ साल ही है इसलिए उसे एक राष्ट्र का रूप पाने की बहुत जल्दी थी। यही कारण है कि वहां बहुत कम समय में सब बातें जल्दी जल्दी होती नजर आती हैं।

भारत जैसे प्राचीन राष्ट्र की समस्या नायक बनाने की नहीं, नायकों की स्मृति को संजो कर रखने की है। चाणक्य हमारे उन नायकों में से हैं जिनको न केवल स्मृतियों में सजो कर रखना चाहिए, बल्कि उनकी बातों को भी व्यवहार में उतारना आवश्यक है।[18,19]

## निष्कर्ष

चाणक्य का कर्म इस बात का प्रमाण है कि भारत वर्ष को प्राचीन काल से ही एक ही सांस्कृतिक राष्ट्र माना जाता था। समय—समय पर राजनैतिक रूप से वह छोटे—छोटे रजवाड़ों में बंट जाता रहा हो, लेकिन किसी बाहरी संकट के सामने उसका वही विराट आकार आंखों के सामने आता रहा है जिसकी सीमाएं आसेतु हिमालय बताई गई हैं। उत्तरापथ पर उत्तर–पश्चिम भारत में उत्पन्न हुआ बालक चाणक्य, जिसकी शिक्षा–दीक्षा उस सीमा प्रांत में ही हई हो, सुदूर पूर्व में साम्राज्य स्थापना की कल्पना कैसे कर सकता था? एक स्थापित साम्राज्य को उखाडने के लिए केवल साहस ही नहीं जन समर्थन भी चाहिए, जनता के बीच प्रतिष्ठा चाहिए, जो शायद उसे उत्तर–पश्चिम में मिल सकता था, पूर्व भारत में नहीं मिल सकता था जहां की भाषा भी भिन्न रही होगी। यह हुआ तो इसलिए कि नालंदा और तक्षशिला में भारत की जो छवि दिखाई देती थी, वह एक समान थी। जिस जैन परंपरा में चाणक्य को दमिल या तमिल कहा गया है, वे भी इस तथ्य को ही पुष्ट करती हैं कि सुदूर दक्षिण में पैदा हुआ चाणक्य उत्तर पश्चिम में शिक्षा पाकर पूर्वी भारत में राजनैतिक क्रांति कर सकता है। वह भी अपने लिए नहीं, एक प्रतिभावान गरीब बालक के पीछे पूरे समाज को खड़ा करके। उस बालक का वंश शायद कई पीढियों से अपनी शक्ति और सम्पन्नता खो चुका था और कोई उसे क्षत्रिय तक मानने को भी तैयार नहीं था। यह स्वाभाविक है कि जब चंद्रगुप्त मौर्य सम्राट बन गए तो सभी सम्प्रदायों के लोगों ने उन्हें अपना बताने का प्रयास किया। कोई उन्हें शाक्य घोषित करके बुद्ध से जोडने का प्रयास करने लगा, तो कोई उन्हें दक्षिणात्य बताने लगा जहां जैन परंपरा का पर्याप्त प्रभाव था। लेकिन चाणक्य ने जब चुद्रगुप्त को चुना तो वह एक साधारण सा बालक था जिसके पास न तो कुल की प्रतिष्ठा थी न धनबल और न ही सैन्य बल। चाणक्य ने उसमें बचपन में ही एक नायक के गुण देखे थे, जिन्हें बस मांजने की आवश्यकता थी।[20]

## संदर्भ

1. ट्रॉटमैन 1971 , पृ. 21.
2. ट्रॉटमैन 1971 , पृ. 12.

3. "मौर्य साम्राज्य" । नेशनल ज्योग्राफिक सोसायटी । 20 अगस्त 2020। 20 जनवरी 2022 को पुनः प्राप्त किया गया ।

4. मैबेट, आई.डब्ल्यू. (1964)। "अर्थशास्त्र की तिथि"। जर्नल ऑफ द अमेरिकन ओरिएंटल सोसाइटी । 84 (2)। अमेरिकन ओरिएंटल सोसाइटी: 162–169 । डीओआई : 10.2307/597102 । आई.एस.एन.एस. 0003-0279 । जे.एस.टी.ओ.आर. 597102 ।

5. ओलिवेल 2013 , परिचय।

6. लेनदेन और पदानुक्रम । रूटलेज। 9 अगस्त 2017। पृष्ठ 56। ISBN 978-1351393966.

7. नमिता संजय सुगंधी (2008). इतिहास के प्रतिरूपों के बीच: दक्षिणी दक्कन में मौर्य साम्राज्य के आपसी संबंधों पर पुनर्विचार . पृ. 88–89 . ISBN 978-0-549-74441-29 दिसंबर 2024 को प्राप्त किया गया ।

8. ट्रॉटमैन 1971 , पृ. 43.

9. ट्रॉटमैन 1971 , पृ. 11.

10. ट्रॉटमैन 1971 , पृ. 16.

11. ट्रॉटमैन 1971 , पृ. 18.

12. ट्रॉटमैन 1971 , पृ. 13.

13. ट्रॉटमैन 1971 , पृ. 14.

14. ट्रॉटमैन 1971 , पृ. 15.

15. ट्रॉटमैन 1971 , पृ. 28.

16. उपिंदर सिंह 2016 , पृ. 331.

17. ट्रॉटमैन 1971 , पृ. 29.

18. कल्लिदैकुरिची अय्याह नीलकांत शास्त्री (1988)। नंदों और मौर्यों का युग । मोतीलाल बनारसीदास. पी। 148. आईएसबीएन 978-81-208-0466-1.

19. ट्रॉटमैन 1971 , पृ. 22.

20. ट्रॉटमैन 1971 , पृ. 23.